COHERENCE – The Multidisciplinary Research Journal
Volume No: 15, Issue No: 2, Year: 2024 (July-December)
PP: 83-90
ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

लोक साहित्यक पुरोधा

अम्बिका कुमारी
शोधार्थी,
विश्वविद्यालय मैथिली विभाग ,बी. एन. मण्डल विश्वविद्यालय, लालू नगर, मधेपुरा

'साहित्य' एकटा व्यापक शब्द अछि। प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक जाति आ प्रत्येक समाज अपन-अपन साहित्यक विकास अपन ढंगसँ कयलक आओर इएह विकास वैषम्य साहित्य स्वरुपकेँ निश्चित नहि होमय देलक। जतेक भाषाक आचार्य साहित्यक संबंधमे ततबे विचार।[1]

मिथिला धर्मप्राण साकेतक नाक सभ सुरलोक के दिव्य ज्ञान देबाक सतत् केन्द्र रहल अछि। अनुराग, व्यवहार, आचार-सचार, मैथिली सन संस्कारित भाषा अनमोलीय, सभहक लेल अनुकरणीय बनल अछि। एखनहु एहि ठाम अतिथि सत्कार प्रचलित देव पूजनानुसार आउ, विराजू, चरण पखारु, बैसू, स्नान, चानन, पूजाक बाद पाँहुन के भोजन ओ आचमनि करा यथायोग्य विदाइ अर्पित कऽ नमन, वंदन अभिनंदन कऽ विदा कयल जाइत अछि। एहि क्रमे नयनकोर श्रावण्य बनि अनेरे छलकि पड़ब अस्वाभाविक नहिं। ई मिथिलामे बसहनिहार सभ छोट-पैघ, पढ़ल-लिखल, बिनु पढ़ल-लिखल सभमे अन्तर्निहित अछि।

इएह लोक अछि।

'लोक' शब्दक अभिप्राय जीवन, जन आ जगहसँ अछि।[2] एकर सामान्य अर्थ ओहि आमजनसँ अछि जकर कोनो विहित नियामक नहि। ई शिष्टजनसँ भिन्न कऽ सकैछ वा ओहिमे समाहित सेहो।[3]

ई 'लोक' शब्द अत्यंत प्राचीन कालसँ हमरा वाङ्मयमे प्रयुक्त होइत आबि रहल अछि। एकर अभिप्राय ओहि सम्पूर्ण जन समुदायसँ अछि, जे कोनोहु देशमे निवास करैत अछि। एकरा अन्तर्गत ओ समाज अबैत अछि जे बाह्य देखाबा सैं रहित एक सादगीयुक्त सरल मौलिक जीवन जीबैत अछि। एहिमे सभ प्रकारक मनुष्य सम्मिलित अछि। अर्थात अपना परिसरसँ लऽ कऽ जतबा दूर धरि पैर तरक भूमि जाइत अछि, ओतऽ धरिक विस्तार लोके थिक।

एहिसँ संदर्भित लोक साहित्य, मानव समाजक ओहि लोकक साहित्य थिक जे सभ्यता, औपचारिकता आ नागरिक संस्कारसँ दूर अपन आदिम प्रवृत्तिसँ आबद्ध सहजावस्थामे जीवन व्यतित करैत अछि। ई साहित्य जनमानस के नैसर्गिक उद्गारक सहज, स्वाभाविक एवं मौखिक अभिव्यक्तिक साहित्य थिक, जाहिमे ओकर आशा, आकांक्षा, उल्लास, अवसाद एवं धारणा के वाणी भेटैत अछि। यथार्थतः ई साहित्य ओतबे स्वाभाविक अछि, जतवे जंगलमे प्रस्फुटित फूल, ओतवे स्वच्छंद जतवे आकाशमे विचरण करऽ वाली चिड़ै-चुनमुनी, ओतवे सरल आ पवित्र जतवे गंगाक निर्मल धार!

लोकसाहित्यक लोकानुभूतिक लोकभाव, लोक विवेक आ लोक कल्पना तीनूक अस्तित्व महत्वपूर्ण अछि। लोकभाव लोक रचनाक केन्द्रीय तत्व अछि, जखनकि लोक विवेकसं सम्पुष्ट भऽ कऽ ओ

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

विविधता, व्यापकता आ सघनता पबैत अछि। दूनूक माध्यम अछि लोक कल्पना जे लोकजीवनसँ कच्चा माल लबैत अछि, ओहिमे उपयुक्तक चयन करैत अछि आ फेर संयोजित करऽमे सहायक बनैत अछि। लोकभाव, लोकविवेक आ लोक कल्पनाक लोकस्तरपर संघटने लोक साहित्यक लोकानुभूति अछि। लोककाव्यमे भावुकता प्रधानता रहैत अछि, लोकगायामे तीनू तत्वक संतुलन रहैत अछि तऽ लोककथामे लोकविवेक अनिवार्यता ओकर महत्व कैँ बढ़ा दैत अछि। एकर आनो विधा एहि सभ स्वरुप के कोनो-ने-कोनो रुपँ अंगीकार कयने रहैत अछि।

लोकसाहित्यक संदर्भमे बहुत किछु लिखल गेल अछि। लिखल जा रहल अछि, आ विश्वक प्रत्येक देशमे एहिपर लेखनक ललक उत्पन्न भऽ गेल अछि। मुदा से आश्चर्य अछि जे शासक वर्ग द्वारा अपना पक्षमे अपन यश-कीर्तिक लेल लिखबाओल गेल शिलालेख, सनद, ताम्र-पत्र, अभिलेख आदि के प्रामाणिक मानि लेल जाइत अछि। कारण इतिहास के व्युत्पत्ति लाभ अर्थ अनुसंधानसँ प्राप्त ज्ञान के मानल जाइत रहल अछि। एहि अर्थमे इतिहास के विज्ञान मानऽ वला समर्थक इतिहासकार प्रामाणिक तथ्यक संकलन लेल प्रामाणिक साक्ष्यक खोज अनिवार्य ठहरा देल जाइत अछि। लोक साहित्यक मौखिकपरम्परामे जीवित लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा, मिथकया, जनश्रुति, लोकनाटक, लोकवचन, लोकोक्ति, डाकवचन, लोकव्यवहार आदि एहन साक्ष्य अछि, जे लोकमान्ये होइत लोक द्वारा ग्रहीत होइत अछि। ओकरामे कोनो भेदभाव, पक्षपात आ आग्रह नहि होइछ अपितु एतऽ धरि देखब उपयुक्त होयत जे कतोक लोकसाक्ष्य सभसँ इतिहासक भ्रांति-दुविधा सेहो दूर भऽ जाइत अछि।

लोक साहित्य मानव समाजक ओहि लोकक साहित्य थिक; जे सभ्यता, औपचारिकता आ नागरिक संस्कारसँ दूर अपन आदिम प्रवृत्तिसँ आबद्ध सहजावस्थामे जीवन व्यतीत करैत अछि।[4]

मैथिली लोक साहित्यक उद्घाटनक प्रति सभसँ पहिने ध्यानाकृष्ट कयलनि। सर्वश्री जार्ज अब्राह्म ग्रियर्सन पछाति डॉ. ब्रज किशोर वर्मा 'मणिपद्म', डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन', डॉ. विश्वेश्वर मिश्र, डॉ. रामदेव झा प्रभृति विद्वान लोकनि अपना-अपना ढंगे एकर तकतिय्यान कयलनि। वर्तमानमे जे व्यक्तित्व एहि मैथिली लोक साहित्य प्रति अनवरत दिन-राति काज कऽ रहलाह अछि, ओ हस्ताक्षर छथि- डॉ. महेन्द्र नारायण राम।

लोकमे कथा कहबाक अथवा गीत गयबाक प्रवृत्ति जहियेसँ भेल तहियेसँ लोक-साहित्यक प्रादुर्भाव भेल।[5] कोनो युगमे शिष्ट ओ परिनिष्ठित साहित्यसँ भिन्न जे रचना होइछ, से ओहि युगक लोक साहित्य कहबैत अछि।[6]

मिथिलामे लोक साहित्यक अक्षय भंडार अछि, परंच अधिकांश अद्यपर्यन्त लोक कंठेमे विद्यमान अछि। डॉ. महेन्द्र नारायण राम ओहि साहित्य सभकैँ बोन-माखुरसँ ताकि-हेरी कऽ लोककंठसँ निकालि लिपिबद्ध कऽ साहित्य मध्य लाबि रहल छथि। डा. रामक मैथिली लोक साहित्य विषयक मूल संग्रहक बहुत बेसी अवदान छनि। मूल संग्रहक मूलतः चरि गोट पोथी प्रकाशित अछि- कारिख लोकगाथा, सलहेस लोकगाथा, दीनाभद्री लोकगाथा, आ भाऊ भँगत गहबर गीत।

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

कारिख लोकगाथा : डॉ. महेन्द्र नारायण रामक शोध कार्य छनि– ‟मैथिली लोकगाथा कारिख पजियारक परिचारिक समालोचनात्मक अध्ययन।” एतद् विषयक पोथी– ‟मैथिली लोक महागाथा : कारिख पजियार’ सेहो प्रकाशित अछि।”

‘कारिख पजियार’ गाथा एक महान विभूतिक ऐश्वर्य ओ क्रिया कलापसँ लोककैं अवगत करबैत अछि, ई गेय धर्मितापर आधारित गाथा अछि। सम्पूर्ण मिथिला, नेपाल, बंगाल, आसाम एहिसँ प्रभावित अछि। धार्मिकता महल अछि। एहि गाथामे ठेठ, सरल ओ सरस भाषाक प्रयोग अछि। ई जनभाषाक विलक्षण दृष्टांत अछि।[7]

सलहेस लोकगाथा : ‘सलहेस लोकगाथा’ दुसाध समाजक जातीय गाथा थिक। ई प्रायः मिथिलाक सर्वाधिक लोकप्रिय गाथा थिक। ई जातीय देवताक रुपमे चित्रांकित भेलाह अछि। हिनकर ई पोथी ‘साहित्य अकादमी’, नई दिल्लीसँ प्रकाशित अछि, जकर उपादेयता बड़ बेसी छनि। सम्पूर्ण मिथिलाक सभ वर्गक लोकमे एहि लोक-नायकक वैशिष्ट्य ज्ञान फुकैत अछि।[8]

दीनाभद्री लोकगाथा : मैथिलीमे कतोक लोकगाथा ‘दलित लोकगाथा'क नामे अभिहीत कयल जा चुकल अछि। दीनाभद्री लोकगाथा वृहत लोकगाथाक अन्तर्गत अबैत अछि, जातीय देवता दीनाभद्रीक वीरगाथा मुसहर जाति विशिष्ट सांस्कृतिकपरम्पराक प्रतीक थिक। सन् 1885मे जार्ज ग्रियर्सन द्वारा प्रकाश आनल एहि गाथाक विस्तार स्वरुप 2007मे डॉ. महेन्द्र नारायण राम द्वारा साहित्य अकादेमी नई दिल्लीसँ प्रकाशित करा सभक समक्ष उपस्थापित कयलनि।

भाओ भगैत गहबर गीत : भाओ भगैत गहबर गीत मिथिलाक भूभागमे बसल, पिछड़ल ओ पछड़ल अनपढ़ ओ अल्प शिक्षित वृहत्तर समाजक लोकपरम्परासँ जनमल आस्थापरक ओ गायन थिक जे खासकऽ लोक-देवी-देवताक गोहारं भगतै ओ अराधानामे गाओल जाइत अछि। डॉ. राम श्रुतिपरम्पराक आइ धरि लोककंठमे विराजमान 576 गीतकैं संकलन कऽ 2010 ई०मे साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीसँ प्रकाशित करा ओकरा धार्मिक गीत, व्रतानुष्ठान गीत, देवी-देवताक गीत, भक्तिपरक गीत आदि नामक अभिदान देलनि।

एकर अतिरिक्त डॉ. महेन्द्र नारायण राम शोध, समीक्षा ओ आलोचनात्मक कतोक लोक साहित्यक संदर्भित पोथीक प्रणयन सेहो कयलनि। एकरा संगहि हिन्दी ओ मैथिली पत्र-पत्रिकादिमे एहि विधाक आलेख निबंध-समीक्षा सेहो प्रकाशित होइत रहैत छनि। फराक-फराक प्रतीकात्मक रुपैं किछु पोथी द्रष्टव्य-

मैथिली लोकवृत्त : बिन्दु ओ विस्तार : लोकवृत्त पूर्वाधर श्रुति-स्मृतिपरम्परा द्वारा निरंतर प्रवहमान रहैत अछि। मौखिकता आ पारम्परिकता एकर सभसँ महत्वपूर्ण लक्षण थिक एवं इयहए एकर प्रमाणिकताक कसौटी थिक। एहि कसौटीपर जे कोनो तत्व आओत से ‘लोकवृत्त’ मानल जायत।

दू पटलमे विभाजित लोकवृत्त, लोक साहित्य, लोकगाथा, लोकनृत्य, लोककथा, लोक नाटक, लोकगीत, लोकचित्र, लोक मंत्र, लोकोक्ति, लोक संस्कृति, लोक वाद्य, लोक व्यवहार, लोकपरम्परा, लोक स्थल, लोक पात्र, लोक देवता, लोकगायक ओ लोक पर्वकैं बारेमे राखि वर्ष 2008मे डॉ. रामक पोथी ‘मैथिली

© Copyright @ Authors

लोकवृत्त : बिन्दु ओ विस्तार' प्रकाशित अछि, जे एकटा दस्तावेजक रुपैं मैथिली लोक साहित्यक विस्तृत सर्वेक्षण प्रस्तुत करैत अछि।

लोक दर्शन : लोक साहित्यपर अनुसंधानात्मक ओ समीक्षात्मक आलेखक कुल सतरह गोट निबंध संग्रह 'लोक दर्शन' जखन-तखन प्रकाशनसँ 2010मे प्रकाशित अछि। ई पोथी लोकजीवनक प्रति जिज्ञासु एवं एतद्विषयक प्रति अनुराग रखनिहार अध्येता लोकनिक लेल शोध-समीक्षाकारक 'एक अनुपम पोथी अछि, जाहिमे खाँटि लोकतत्त्वक अन्वेषण कयल गेल अछि।

लोक संदर्भ : लोकपरक कुल बारह गोट निबंधक संग्रह 'लोक संदर्भ', 2017 ईमे नवारंभसँ प्रकाशित अछि। ई निबंधसभ राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी लेल किंवा पत्रिका विशेष लेल प्रकशनार्थ लिखल गेल छल। मौखिकपरम्परामे जीवन्त एहि निबंध सभकैं एकठाम केलासँ एक संग बहुत रास सामग्री देखबाक सुनबाक आ पढ़वाक गुनबाक अवसर भेटि जयतनि।

लोकाञ्जन : नवारंभसँ 2019 ई०मे प्रकाशित पोथी 'लोकाञ्जन' मिथिलाक बहुरंगी संस्कृति परिधानकैं रमणीक बनबैत अछि। एहि पोथीमे तथ्य निरुपण, साक्ष्य एवं उद्धरण समावेश, सूचना-सम्पृक्ति, उपस्थापनक पृष्ठभूमि निर्माण, भाषा प्रवाह आदि प्रशंसनीय भेल अछि। एहिगे लोक साहित्य चेतना आ लोकवादी दृष्टि झकझक झलकैत अछि।

पंच लोकदेवता : हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटनासँ प्रकाशित पोथी 'पंच लोकदेवतामे' राजा सलहेस, बाबा चाहैरमल, दीनाभद्री, कारिख पजियार ओ ज्योति पजियरारक जीवन गाथा, लोकदेवताक महत्ता बतबैत पौराणिक देवताक समानांतर लोक मानसमे लोक देवताक प्रतिष्ठापन कयल गेल अछि।

मिथिला की लोक संस्कृति: स्वरुप एवं सौन्दर्य : लोक गंधी विचार सभसँ ओत प्रोत ई पोथी लोक संस्कृति ओहिपरत सभकैं उद्वेदन करैत अछि- जे भारतीय समाजक वैविध्यपूर्ण विराटताक दस्तावेज हेबाक दावा प्रस्तुत कऽ सकैत अछि।

लोक-काव्य कुसुम : गाथा सभक अपन ललित्य-विशेषतासँ युक्त कुल 43 गोट गाथाक पद्य बद्ध स्वरुपमे डॉ. रामक लेखनी 'लोक काव्य कुसुमकैं' उकेरpageलनि अछि। जे अनुपम तऽ अछिये मैथिली लोक साहित्यक अद्वितीयक रचना थिक।

दामिनी : 45 लोक कविताक रचना थिक दामिनी एकर प्रकाशन, 2024मे नवारंभ प्रकाशनसँ भेल अछि। एकर रचनाकर डॉ. राम एहि संग्रहमे लोक साहित्यक प्रमुख विद्या लोकगाथाक नायक आधारित कविताक सृजन थिक।

पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित लोक साहित्य विषयक शोध-समीक्षा, आलेख-निबंध : डॉ. महेन्द्र नारायण रामक शोध-आलेख पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित होइत रहल अछि जकर मूल्यांकन साहित्य जगतमे होइत रहैत अछि। खासकऽ मैथिली साहित्यक भंडार एहिसँ भरल जा रहल अछि। हिनक बहुत रास आलेख एखन धरि एहनो अछि, जे पत्र-पत्रिकादिमे एखनो सुरक्षित अछि। जाहिमेसँ प्रतीकात्मक रुपैं दू टापर चर्च करब एहिठाम समीचीन बुझना जाइत अछि।

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

पहिल चर्चित आलेख अछि 'मैथिली, मगही ओ भोजपुरी लोकगीतमे लोक संस्कृति' आजुक समयमे जखन चहुँदिस भूमण्डलीकरणक बसातसँ परिस्थिति बदलि रहल अछि, लोकभाषा आ संस्कृति छहोछित भऽ रहल अछि। विश्वग्रामक अन्हार जंगलमे मिथिलावासीक परिचिति बिला रहल अछि। रोजी-रोटीक समस्याक कारणें लोकक पलायन भऽ रहल अछि। एहिपर चिन्ता करैत देशक विभिन्न स्थानमे बसल प्रवासी मैथिल के द्वारा भाषा, संस्कृति ओ समाजक अस्तित्वक रक्षार्थ पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन जरुरी भऽ रहल अछि। एहि स्थितिके ध्यानमे राखि 'मलंगिया आर्ट्स प्रा.लि., नई दिल्ली' द्वारा हालहिमे 'मैथिली लोक' नामक पत्रिकाक प्रकाशन शुभारंभकयल गेल अछि। सम्पादक ऋषि कुमार झा 'मलंगिया' अपन सम्पादकीयमे कहैत छथि जे- 'तेहने दुःस्थितिमे हमरा प्रवासी सभक दायित्व बढ़ि जाइत अछि, आ तकरै ध्यानमे राखि जन साधारण पाठक धरि मैथिली साहित्य कला-संस्कृति, भाषा, इतिहास आदिक पठन-पाठन सुलभ करयबाक उद्देश्य मैथिली साहित्य संकृतिकैं विश्व पटलपर राखि संरक्षण एवं संवर्द्धन करब अछि संगहि स्वस्थ साहित्यकैं जन समुदायक समक्ष पहुँचायब अछि।

एहि पत्रिकामे डॉ. गहेन्द्र नारायण रामक शोध-निबंध 'मैथिली, भोजपुरी ओ मगही लोकगीतमे लोक-संस्कृति' प्रकाशित भेल अछि। एहि आलेखमे डॉ. राम मिथिला, भोजपुर आ मग्गह क्षेत्रमे गाबऽ जायवला लोकगीतमे लोक-सांस्कृतिक गंभीरतापूर्वक समीक्षा दृष्टिगत करौलनि अछि। ओ कहैत छथि–

बिहारमे तीन जनपदीय भाषा यथा- मगही, भोजपुरी आ मैथिली अपन विस्तार पाबि चुकल अछि। तीनूक भंडार विपुल अछि। कविता, गीत, गजल, नाटक, कथा, उपन्यास, निबंध, लघुकथा, रेखाचित्र, संस्मरण, साक्षात्कार, यात्रा-वृत्तांत, कोश, व्याकरण आदि सभ विधाक रचना उपलब्ध अछि। परंच सभमे जे समृद्ध अछि, ओ अछि- एकर मौखिक साहित्य। एकर लोक-साहित्य प्रभृत लोक-संस्कृतिक प्रवाह निरंतर गतिमान अछि। भारतक अन्यान्य भाषाक लोकगीत सदृश्य मगही, भोजपुरी आ मैथिली लोकगीत जनकंठक सम्पत्ति थिक तथा श्रुतिपरम्परासँ एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ीकैं प्राप्त होइत रहल अछि।

एहिठाम मैथिली, भोजपुरी ओ मगही भाषाक अंतर्गत गाबऽ जायवला लोकगीत झूमर जे सभ भाषामे गाओल जाइत अछि, विशेष रुपसँ उल्लेखनीय अछि। डॉ. राम द्वारा प्रस्तुत तथ्यक दृष्टिपात करब आवश्यक बुझना जाइछ। ओ कहैत छथि-

'झूमर' शब्दसँ स्पष्ट अछि खुशीसँ झुमि जायब, गाबि उठब, नृत्य करब आदि। ई एक गोट प्राचीन परंपरा शैली थिक। एकरा झूमर, झम्मर, झुम्मरि, झुमरि, झुमुर, झुमरा आदि एकहि अर्थक कतेको नामसँ जानल जाइत अछि। प्रत्येक आनंदक उत्सवमे एकरा गाओल जाइत अछि। जखन जी चाहे प्रसन्नता प्रकट करबाक हो, झूमर गाओल जाइत अछि।

भोजपुरी क्षेत्रमे 'झूमर' नामसँ प्रचलित ई शैली अत्यंत मोहक अछि। विभिन्न क्षेत्रक पुनरावृत्तिसँ एक विशेष सौन्दर्यानुभूति होइत अछि, जे अद्भुत छै-

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

बगियामे फूले रामा बेली हो चमेलिया

कोइलिया बनबा बोलो हो सांवरिया

आमका के डारीमे रेशम के डोरिया

झुला झुलावे मोरा संग के सहेलिया

पपीहरा रट लावे झाँझ सवेरिया।

मैथिली झुम्मरि देखल जाय-

मोरा रे अंगनमा चनन केर गछिया

ताहि चढ़ि कुड़रय काग रे।

सोने चोंच बाँधि देब तोयसँ बायस

जहाँ पिया आओत आज रे...।

मगही झुम्मरि एहि ठाम द्रष्टव्य-

'गाँवे गाँवे भेलइ अनोर, सखी चलऽ झुमर गावे।

देवेचल 'भंगिया' सिन्होर, सखी चलऽ झुमर गावे।

भारतमे मचल गदोर, सखी चलऽ झुमर गावे।

अंग्रेज घुसल हवे चोर, सखी चल मूसर मारे।

अंग्रेज चोराय लेल भोर, सखी चलऽ दीआबाती बारे।

एहि तरहैं महेन्द्र जी झुमर के माध्यमे मैथिली, भोजपुरी ओ मगही लोकगीतक अन्तर्गत व्याप्त लोकसंस्कृतिके गम्भीरतापूर्वक चिन्तन-मनन कयलनि अछि, जे प्रेरक अछि।

लोकगीत एक एहन मौखिकपरम्परा थिक जे मनुष्यमे वंशानुगत क्रमसँ चलि अबैत अछि आ जकर जड़ि मूल रूपें सुदूर अतीतमे विद्यमान होइत अछि। अशिक्षित ग्रामीण आ निरीह जनताक भावुक हृदयक संवेदनशीलतासँ फुटिकल 'लोकगीत' ओकरा ठोरपर आबि कऽ सुर आ ताल-लयक संग गुंजित होइत लगैत अछि- ई उक्ति डॉ. महेन्द्र नारायण रामक छियनि, जे सटिक अछि। ई प्रकाशित अछि, नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानसँ प्रकाशित 'मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी, 2067 जेठ, 9, 10 गते, जनकपुर धाममे डॉ. महेन्द्र नारायण राम लिखित संगोष्ठी पढ़ल गेल कार्य पत्र 'मैथिली लोकगीत अवस्थामे'।

एहिमे डॉ. राम मैथिली लोकगीत स्वरुपक वर्णन करैत मडुआ उलबऽ कालक गीत, गोदना गीत, नेना गीत, लगनकुमारक गीत, गोँसाइ गीत, वरक परीछनक गीत, मटकोरक गीत, अठोदरक गीत, लाबा भुजबाक गीत, लाबा छिड़िआबैत कालक गीत, मड़बा घूमेनाइ कालक गीत, कनियाँ निरीक्षण गीत, सिनुरदानक गीत, चुमाओन गीत, देहरी छेकाओन गीत, कोहबर गीत, बरियाती भोजन-डहकन गीत,

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

घौरकी गीत, वरके माँसी बनेबाक गीत, मड़बा बनेनाइ कालक गीत, समदाओन गीत, महफापरसँ कनियाँ उतारऽ कालक गीत, कनियाँ परीछन गीत, महुअक अर्थात् खीर खियैबाक गीत, दहनबीक गीत उदाहरण दैत एहि लोकगीतमे आधुनिकताक प्रभाववला किछु दृष्टान्त सेहो उपस्थापित कयल गेल अछि। मुदा एहि गीत सभपर डॉ. राम चिन्तित छथि।

एहने सन शोध-समीक्षा, अन्वेषण डॉ. महेन्द्र नारायण राम आनो आन निबंध सभमे कयलनि अछि जे हुनक खोजी प्रवृत्ति, शोध समीक्षक, अन्वेषणकर्त्ताकेँ उजागर करैत अछि। सैकड़ो आलेख हिनक यत्र-तत्र पत्र-पत्रिकामे पसरल अछि। किछुक नाम मात्र उल्लेख करब आवश्यक-

लोकगाथामे नारी, ऐतिहासिक लोकसांस्कृतिक आइनामे दरभंगा, लोकगाथाक नायक जातीय जागरणक प्रेरणा-स्रोत, मैथिली लोकगाथामे रस, शिक्षाक अवस्था। (सुधार: रस के बाद कॉमा हटाकर 'शिक्षाक अवस्था' को सही स्थान दिया गया) प्राचीन भारतीय लोकवार्त्ता ओ मैथिली लोक साहित्यपरम्परा, महाकाव्यपरम्परामे 'जय राजा सलहेस', दीनाभद्रीक लोकगाथाक पारलौकिक कथा-तत्व, मैथिलीक लोककथा:परम्परा ओ परिवर्तन, भाओ-भगतै-गहवर गीतमे सलहेस, थारु जातिक लोक जीवन, पाबनि-तिहार ओ देवी-देवता, मिथिलाक यादव जातिक लोकजीवन पाबनि-तिहार ओ देवी-देवता आदि सहित कतेको आलेख अछि।

ई कहल जा सकैत अछि जे मैथिली लोक साहित्य विषयक डॉ. राम शोध-समीक्षा बहुत सटिक ओ तथ्यपरक छनि। हुनक आलोचनात्मक कार्य प्रशंसनीय सहित अनुकरणीय अछि। हुनक एतद्विषयक सहित मूल्यांकन फराकँस कयल जायत तऽ स्वतंत्र पोथी भऽ सकैत अछि। (सुधार: 'नहि' को काटकर 'सहित' जोड़ा गया) मुदा एतबा आवश्यक अछि जे अद्यतन जे हुनक शोध-समीक्षापर पोथी, मैथिली लोकगाथा: कारिख पजियार, मैथिली लोकवृत्त बिन्दु ओ विस्तार, ओ लोक दर्शन अद्वितीय छनि एहिमे सन्निहित आलेख सभ शोधपरक छनि। संगहि हिनक सैकड़ो प्रकाशित ओ अप्रकाशित शोध निबन्ध मैथिली लोक साहित्य ओ शिष्ट साहित्यक अमूल्य निधि थिकनि, जेपरवर्ती रचनाकारक लेल एतद् विषयक शोधार्थी, पाठक, जिज्ञासु लोकनिक मार्गदर्शिका थिकनि, जकरापर जतेक बेर मूल्यांकन कयल जायत ततेक नव विषयवस्तु सोझाँ आओत। एकर अतिरिक्त बहुतोक एहन रचना अछि जाहिसँ डॉ. राम मैथिली लोक साहित्य संसारकेँ समृद्ध कयलनि अछि।

निष्कर्षत : ई कहबामे अतिशयोक्ति नहि जे डॉ. महेन्द्र नारायण राम लोकमे रमैत छथि, लोककेँ गुनैत छथि, लोककेँ जीबैत छथि आ लोकमे रहैत छथि। लोक हिनक पहिचान अछि, आन अछि, शान अछि, आ प्राण अछि। वस्तुत ओ लोक गाथा सभक व्याख्याता छथि, स्वयं भगतै सभक उद्गाता छथि। संपूर्णतामे ई कही तऽ डॉ. राम लोक साहित्यक पुरोधा थिकाह।

1. **संदर्भ :–**

a. मैथिली काव्य शास्त्र : डॉ. दिनेश कुमार झा, मैथिली अकादमी, पटना, 2006, पृ. 46

b. ऋग्वेद

© Copyright @ Authors

c. लोक काव्य कुसुम, डॉ. महेन्द्र नारायण राम, अनुप्रॉस प्रकाशन 2024, भूमिका- डॉ. रंगनाथ दिवाकर, पृ. 10

d. मैथिली लोक साहित्य का अध्ययन, ताराकांत मिश्र, जानकी प्रकाशन, पटना दिल्ली, पृ. 1

e. मैथिली लोकगाथा : कारिख पजियार, हीरा प्रकाशन, खुटौना, पृ. 21

f. मैथिली साहित्यक इतिहास : डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' भारती प्रीतक केन्द्र, दरभंगा, 1991, पृ. 36

g. कारिख लोकगाथा : डॉ. महेन्द्र नारायण राम, हीरा प्रकाशन

h. सलहेस लोकगाथा : डॉ. महेन्द्र नारायण राम, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 2007, पृ. 89

© Copyright @ Authors